हिन्दी लोक साहित्य के अध्ययन का इतिहास-विकास

(क) विश्व फलक पर

(ख) भारतीय फलक पर - (i) अध्ययन विश्लेषण से पूर्व की परम्परा

(ii) अध्ययन-विश्लेषण की परम्परा

•आधुनिक भारतीय भाषागत लोक साहित्य के अध्ययन की परम्परा

(क) पाश्चात्य विद्वानों के प्रयास (ख) भारतीय विद्वानों के प्रयास

•हिन्दी लोक साहित्य के अध्ययन की परम्परा

(क) संस्थागत

पाश्चात्य प्रयास

भारतीय प्रयास

(ख) व्यक्तिगत

पाश्चात्य

भारतीय

(क) विश्व फलक पर (यूरोपियन विद्वानों द्वारा)

•सन् १६८७ में सर्वप्रथम जॉन आम्ब्रे - रीमेन्स ऑफ जेंटिललिज्म एण्ड जुडेरिक

•साठ वर्ष बाद १७४६ - रेवरेण्ड हेनरी बॉर्न - एंटिक्स ऑफ दी कॉमन

(स्थानीय रोमन कैथालिक विश्वासों का संग्रह)

•इंग्लैण्ड में एडीसन - प्राचीन गाथाओं का संग्रह

•स्पेन में पेडो फ्लोरे ने सामान्य रोमांच काव्य का प्रकाशन

•इंग्लैण्ड के टॉमस पर्सी - १७६४ में 'रैलिक्स ऑफ एशियन्ट इंग्लिश पोयट्री -

(भूत-प्रेत परियों, जादूगरों के रोमांचक गीत-कथाएँ)

व्यवस्थित संग्रह करके अध्ययन - सर्वप्रथम जर्मन विद्वान ग्रिम बन्धु

•जैकब ग्रिम - १७८५-१८६३ जर्मनी लोकगीत, लोक कथाओं, धर्मगाथाओं पर विचार, व्याख्या-विश्लेषण

•विलहेल्स - १७८६-१८५६

•सन् १८७७ में जे०बैड - ऑबजैक्शन आन पापुलर एंटीक्विटिज

•सन् १८४६ - इंग्लैण्ड के इतिहासकार- विलियम जॉन टामस - फोकलोर शब्द निर्माण किया।

•डॉ० फ्रेजर ने 'गोल्डन बाऊ' (१८ भाग) लिखी

•ई०बी० रायटलर - प्रिमिटिव कल्चर

•जर्मनी में रिचर्ड वागनर, फ्रांस में माइकेल, इटली में निकोलो तोमिसिर्या ने लोक संग्रह सन् १८६६ में इंग्लैण्ड में फोकलोर सोसायटी की स्थापना तथा 'नोट्स क्वेरिज' नामक एवं 'फोकलोर' पत्रिका का प्रकाशन किया।

इनके अतिरिक्त- एडवर्ड टेलर, एण्ड्रयू लैंग और जेम्स पुवर, मुरका हेलर- प्रिमि
कल्चर (१८७१)
मैक्समूल धर्मगाथा मूलक सम्प्रदाय में अग्रगणी (यूरापीय जातिया आर्य वर्ग में
संबंधित)
विलियम कोक्स - दी माईथोलॉजी ऑफ आर्यन नेशन

भारतीय फलक पर

सामान्य धारणा- भारत यूरोपियन विद्वानों के प्रयास से लगातार २०० वर्ष पूर्व लो
वार्ता संग्रह प्रारंभ हुआ किन्तु लोकवार्ता का स्वतंत्र विवेचन नहीं था किन्तु दृष्टि
लोकोन्मुखी थी।

(क) अध्ययन विश्लेषण से पूर्व परम्परा

•लोकवार्ता सम्बन्धी - ऋग्वेद (यज्ञ-यज्ञादि विधार), अथर्ववेद (अंधविश्व
टोने-टोटके जादू तन्त्र)

•उपनिषद काल में गृह्यसूत्रों का लोकसंस्कृति का विश्वकोश कहा है। (पास्कर
अश्वलायन ने विशेष)

•पालि जातक

•नच जातक में वैवाहिक प्रथा तथा वर के आवश्यक गुण

•१३वीं शती में 'शारदातनय' ने 'रासक' उपरूपक को लास्य नृत्य का भेद मा
दण्ड रासक, मण्डल रासक और नाट्य रासक, नृत्यगीतपरक नाट्य के विविध
आगे चलकर यही राटी रास नृत्य परम्परा

•कठपुतली के नाच, रासलीला, रामलीला, स्वांग, भगत, नौटंकी, कीर्तिनिया, तमा
यक्षगान

•अठारहवीं शताब्दी – यूरोपीय जर्मन विद्वान – मैक्समूलर – तुलनात्मक धर्मगा
सम्प्रदाय
•इटली – एंजेलोग्यूबर्ने – जूलाजिकलर माईथालोजी – ऋग्वेद – (वृषभ वगाय संबं
गाथा)
•अमरीका – विद्मारिस व्लूमफील्ड १९१४ – हिन्दू कथाओं में प्रयुक्त अभिप्रायों
अध्ययन
•आर०आर० केरिट – १९१६ में 'प्राच्य विद्या संस्थान'

(ख) अध्ययन विश्लेषण परम्परा

आधुनिक युग में अंग्रेजों द्वारा प्रारंभ -

१७८४ में विलियम जोन्स - एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल

१. आधुनिक भारतीय भाषागत लोक साहित्य अध्ययन २. हिन्दी ले साहित्य

•**आधुनिक भारतीय भाषागत** - जेम्स एण्ड्रयू लौग - बंगाल में धर्मप्रचारक बंगाली कहाव का संग्रह (१८१४-१८८७) फोकलोर सोसायटी के सदस्य

•१८६८ में प्रवाद माला (बंगाली कहावतें), विलियम विल्सन हन्टर, १८७२ नारी सम्मान प्रचलित ३००० कहावतें, एनल्स ऑफ रूरल बंगाल (संथाल लोकगाथाएं), १८८१ 'ईस प्रावर्ब्स एण्ड एवलम्ब (प्राचीन कला, जीवन मूल्य)

•१८७० टॉमस हर्बट लेनिन - दि वाईल्ड रेसेज ऑफ साउथ ईस्टर्न इण्डि (चिटगांव-चाकमा, फुकी लुशाई जाति की पद्धति)

•१८७३ टॉमस हर्बट लेनिन कूकी कहावतें

•१८७२ एडवर्ड डॉल्टन - डिस्क्रियटिव एंथगेलाजी ऑफ बंगाल (नागा, खासी, गा कछारी, गौंड जनजातियों का स्वरूप)

सन् १८७२ चार्ल्स ग्रोवर - 'फोक सांग्स ऑफ सदर्न इण्डिया' (लोकगीत संग्रह)
१९०३ - रिचर्डसन - रोमेण्टिक टेल्स ऑफ पंजाब (पंजाबी लोककथा)
जे०डी० एण्डरसन - कलेक्शन ऑफ कछारी फोकटेल्स एण्ड टाईम्स (कछार जाति
लोककथायें)
१८९९ - आर०एम० लॉफेनैस - 'सम सांग्स ऑफ दी पोर्तुलगीज इण्डियन (गोव
लोक गीत)
१९०५ - एफ० हान कुरूख फोकलोर इन आरिजिनल (उराव जाति के
लोकगीत)
१९०६ - थर्स्टन एथनॉग्राफिक नोट्स ऑफ सदर्न इण्डिया
१९१२ - कास्टम एण्ड ट्राइब्स ऑफ सदर्न इण्डिया (दक्षिण भारत के लोक विश
एवं परम्परा)
अलेक्जेंडर फोर्वे - 'रासमाला' (गुजरात की दन्त कथाएं, कथा गीत)

भारतीय विद्वानों के प्रयास –

१८८२ – तारूदत्त – ऐसेयंट बैलेड्स एण्ड लीजेण्ट्स ऑफ हिन्दुस्तान (हिन्दू धर्म गाथा क
का अवदान)

१८८४ – नरेश शास्त्री फोकलोर ऑफ सर्दन इण्डिया – (दक्षिण की समस्त लोक वार्ता
प्रकाशित पहली पुस्तक) तेलगू कहावतें, तमिल कन्नड लोकगीतों का अनुवाद

१८७३ – लाल बिहारी, डे-फोक टेल्स ऑफ बंगाल

१८७० – कवि नर्मद – नागर स्त्रियों के ग्वाला गीत (संस्कारगीत)

दक्षिणारंजन मित्र मजूमदार – 'कथा साहित्य' नामक पत्रिका तथा ठाकुर मारिझूलि' बां
लोक कथा

शरदचंद राय – (छोटा नागपुर जिले की जनजातियों का अध्ययन) मैन इन इण्डिया पत्रि
निकाली, संथाल, ओख, मण्डा, बिरहोर, भुइया जनजाति

क्षबेरचन्द्र कालीदास मेंधाणी – रठियाली रातें (१९२५ से १९४२)

दिनेशचन्द्र सेन – १९१७ – राजा गोपचन्द्र के लोकगीत मैमन सिंह गीतिका ईर्स्टन बंग
बैलैड्स

हिन्दी लोक साहित्य के अध्ययन की परम्परा -

(१६४० से १६४५ में अधिक) १६४३ में एशियाटिक फोक लिटरेचर सोसायटी कल

हिन्दी में लोकसाहित्य का श्रीगणेश १८७५ में पर्वतीय क्षेत्र कुमाऊँ की लोक कथाओं दन्त कथाओं आदि का संग्रह

रूसी विद्वान- इवान पावलों विच सिनायेव

•पाश्चात्य विद्वानों के प्रयास

१. कर्नल जेम्स टॉड - (स्काटलैण्ड के निवासी - एनेलेसीस एण्ड एंटीक्वेरिज रसताइल ऑफ राजपूत
(१८२६-१८३२)

२. जार्ज ग्रियर्सन -

१. लंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया १८६५ में आल्हा

२. १८८४ विजयामल की गाथा (राजस्थानी)

३. १८८५ दि सांग ऑफ आल्हा मैरिज

४. १८८५ टू वर्शन्ज ऑफ दि सांग ऑफ गोपीचन्द

५. सन् १८८६ में सम भोजपुरी सांग्स

६. १८८६ नयकवा बन्जारा

३. विलियम क्रुक १८८१ - ''नार्थ इण्डिया नोट्स एण्ड क्वेरिज'' पत्रिका का प्रकाशन १८६६ 'पापुलर रिलि
एण्ड फोकलोर ऑफ नादर्न इण्डिया' (टोने-टोटके, ग्रामदेवता, भूत-प्रेत, रीति-रिवाज) 'कास्टम एण्ड ट्राइ
ऑफ वेस्ट प्राविंस'

४. पी०ओ० वांडिग फोकलोर ऑफ द संथाल परगनाजन - १६०६ (१८५ कहानियाँ टिप्पणियों सहित)

५. पादरी स्विर्टन - ''रोमांटिक हेल्फ फ्राम द पंजाब (१६०८)

भारतीय विद्वान -

•१८०६ से १८२२ के मध्य कर्नल टॉड के लिए काम करने वाले जैन यति ज्ञानचंद (प्रथम)

•१८६५ में टी० एस० फ्रैंक के साथ - मुंशी राम स्वरूप (आल्हा फरूर्खाबाद)

१८९३ में पं० राम गरीब चौबे - विलियम क्रुक के साथ

हिन्दी लोक साहित्य अध्ययन के प्रथम अध्येता -

सन् १८९२ पं० गंगादत्त उप्रेती - Proverbs and Folklore Of Kumauan Garhwal.

१९११ पं० रामबलि चौबे - Songs about the king of Awadhs,

१९१३ पं० मनन्न द्विवेदी (सरबसिया)

१९२५- रामनरेश त्रिपाठी - ग्रामगीत

लोकसाहित्य की प्रमुख पत्रिकाएँ –

•मधुकर, पं० बनारसीदास चतुर्वेदी, १९४०, श्री वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद्

•लोकवार्ता, त्रैमासिक, १९४४, कृष्णानन्द गुप्त, लोकवार्ता परिषद् टीकमगढ़

•विंध्यभूमि, १९४५, हरिराम मिश्र

•राजस्थान भारती, १९४६, अगरचद्र जी नाहरा शार्द्रूल, राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट बीकानेर

•राजस्थानी, १९३८, राजस्थान रिसर्च सोसाइटी कलकत्ता

•भोजपुरी लोक, राजेश्वरी शाण्डिल्य, अखिल भारतीय भोजपुरी संस्था

•ब्रजभारती, ब्रज साहित्य मण्डल, मथुरा

•अवध भारती, गौरीशंकर पाण्डेय एवं उपेन्द्र नाथ राय, फैजाबाद

•आदिवासी लोककला, भारतीय परिषद्

• लोकवार्ता, लोकवार्ता शोध संस्थान, राबर्ट्सगंज, सोनभद्र

अन्य पत्रिकाएँ – चौमासा, छायानट, नौटंकी कला, अतैव, हिन्दुस्तानी, आजकल, रंगायन।

धन्यवाद

प्रस्तुति :
प्रो० पवन अग्रवाल
हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ